पाठ 11

समर्पण

(प्रस्तुत कविता में देश के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना व्यक्त की गयी है।)

मन समर्पित, तन समर्पित,

और यह जीवन समर्पित।

चाहता हूं देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,

किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,

थाल मंे लाऊँ सजा कर भाल जब भी,

कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।

गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

- रामावतार त्यागी

रामावतार त्यागी जी का जन्म सन् 1925 ई0 में मुरादाबाद में हुआ था। 'नया खून' और 'आठवाँ स्वर' इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। सन् 1985 ई0 में इनका देहावसान हो गया। इनकी कविताओं में देश-भक्ति और मानव जीवन के प्रति गहरी संवेदनाएँ मिलती हैं।

शब्दार्थ

समर्पित = पूरी तरह भेंट किया हुआ। **अकिंचन** = अत्यन्त निर्धन, दीन-हीन (जिसके पास कुछ न हो)। **निवेदन** = प्रार्थना, विनती। **भाल** = मस्तक,ललाट। **माँज दो तलवार** = तलवार की धार तेज कर दो। **ढाल** = गैंडे के चमड़े से बना कछुए की पीठ जैसा एक उपकरण जिसे पीठ पर बाँध कर लोग युद्ध करते थे। यह भाले और तलवार के आघात से रक्षा करती थी। **घनेरी** = घनी।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. नीचे कुछ महान देश-भक्तों के चित्र दिये गये हैं। उन्हें पहचानिए तथा उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए-

3. नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, इनकी मदद से आप भी कविता बनाइए -

सूरज, सवेरे, धूप, पत्ती, खिलाता, महकाता, फूल, पौधे, कली, मुस्काना, गाना, खिली,

गन्ध, फल, लाल, पंछी, चहकना, आँख।

2. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और साथियों से पूछने के लिए पाँच प्रश्न बनाइए-

‘माँज दो तलवार को लाओ न देरी,

बाँध दो अब पीठ पर वह ढाल मेरी,

भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।’

4. आपके आस-पास भी कोई ऐसे सैनिक होंगे जिसने देश की रक्षा करते समय जोखिमों का सामना किया होगा। अपने बड़ों के साथ उनसे मिलिए और उनका साक्षात्कार लेकर उनके बारे में जानिए।

विचार और कल्पना

1. हम सभी अपने-अपने ढंग से अपने देश की सेवा कर सकते हैं। बताइए, आप देश की सेवा किस-किस प्रकार से कर सकते हैं ?

2. सैनिक अनेक कठिनाइयाँ सहकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। आप अपने विद्यालय की सम्पत्ति और उसकी सीमा की रक्षा किस प्रकार करेंगे, लिखिए।

कविता से

1. सब कुछ समर्पण के बाद भी कवि क्यों सन्तुष्ट नहीं है ?

2. 'थाल में भाल सजाने' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

3. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुए हैं -

(क) जननी जन्मभूमि की देन के समक्ष कवि अपने को बहुत दीन-हीन समझ रहा है।

(ख) कवि अपना हर्ष-उल्लास और प्राण न्योछावर कर देना चाहता है।

(ग) कवि अपने जीवन की कल्पनाओं, जिज्ञासाओं और आयु को हर क्षण समर्पित करना चाहता है।

(घ) कवि अपने हाथों में तलवार लेकर रणक्षेत्र में कूदना चाहता है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी।

(ख) गान अर्पित, प्राण अर्पित,

रक्त का कण-कण समर्पित।

भाषा की बात

नीचे कविताओं की तीन पंक्तियाँ दी गयी हैं, इनमें रेखांकित शब्द दो बार आये हैं, इन्हें पुनरुक्त (पुनः+उक्त) शब्द-युग्म कहते हंै।

रक्त का कण-कण समर्पित,

आयु का क्षण-क्षण समर्पित,

नीड़ का तृण-तृण समर्पित।

इस प्रकार के शब्दों के चार जोड़े दिये जा रहे हैं, उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) घर-घर (ख) मीठे-मीठे

(ग) डाली-डाली (घ) चलते-चलते

पढ़ने के लिए-

थाल सजाकर किसे पूजने चले प्रात ही मतवाले,

कहाँ चले तुम राम नाम का पीताम्बर तन पर डाले।

इधर प्रयाग न गंगा सागर इधर न रामेश्वर काशी,

इधर कहाँ है तीर्थ तुम्हारा कहाँ चले तुम संन्यासी।

चले झूमते मस्ती से क्या तुम अपना पथ आये भूल,

कहाँ तुम्हारा दीप जलेगा कहाँ चढ़ेगा माला फूल।

मुझे न जाना गंगा सागर मुझ न रामेश्वर काशी,

तीर्थराज चित्तौड़ देखने को मेरी आँखें प्यासी।

-श्यामनारायण पाण्डेय

शिक्षण संकेत

ऊपर लिखी गई कविता का छात्रों से वाचन कराएँ।

इसे भी जानें

अशोक चक्र - शान्ति के दौरान वीरता या साहस दिखाने या बलिदान के लिए दिया जाने वाला देश का सर्वोच्च वीरता सम्मान है।